اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद आने पर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, ए'तिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा। याद रखिये ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह़री, इफ़्त़ारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िमनन जाइज़ हो जाएंगी। ए'तिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिये नहीं होनी चाहिये बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो। **फ़तावा शामी** में है : अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है)।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, सुल्त़ाने शीरीं मक़ाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : اِنَّ اللهَ وَكَّلَ بِقَبْرِیْ مَلَكًا बेशक **अल्लाह** पाक ने एक ऐसा फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है, اَعْطَاهُ اَسْمَاءَ الْخَلَائِقِ जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है, فَلَا يُصَلِّیْ عَلَیَّ اَحَدٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ اِلَّا اَبْلَغَنِیْ بِاسْمِهٖ وَاسْمِ اَبِيْهِ هٰذَا فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ قَدْ صَلّٰى عَلَيْكَ पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है कि फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर (इस वक़्त) दुरूदे पाक पढ़ा है।

(مسند بزّار، الجزء الرابع عشر، مسند عمار بن یاسر، ابن الحمیری عن عمار، ۴/۲۵۴، حدیث: ۱۴۲۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

❖ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम के लिये जब तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ❖ इजतिमाअ़ के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान का मौज़ूअ़ **"जवानी में इबादत के फ़ज़ाइल"** है। उ़मूमन अय्यामे जवानी में बे फ़िक्री व बे परवाई और इन ह़सीन लम्ह़ात की बे क़द्री बुढ़ापे में पछतावे का सबब बनती है। लिहाज़ा जब तक जवानी बाक़ी और सिह़ह़त सलामत है, तो इस को ज़ियादा से ज़ियादा इबादत में गुज़ारना बहुत ज़रूरी है।

इबादत गुज़ार नौजवान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **"ह़िकायतें और नसीह़तें"** के सफ़ह़ा नम्बर 320 पर है : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक नौजवान को आबादी और लोगों से अलग थलग अकेला जंगल में इबादत करते हुवे देखा। मैं ने सलाम किया, उस ने जवाब दिया। फिर मैं ने उस से कहा : ऐ नौजवान ! तुम ऐसी वीरान जगह में

क्यूं हो जहां तुम्हारा कोई मददगार है, न साथी ? उस ने कहा : क्यूं नहीं ! मेरे रब्बे करीम की क़सम ! मेरा मददगार भी है और साथी भी । मैं ने पूछा : (तुम्हारा) मददगार व साथी कहां है ? उस ने जवाब दिया : वोह अपनी इ़ज़्ज़त के साथ मुझ पर बुज़ुर्गी रखता है, अपने इ़ल्मो ह़िक्मत के साथ मेरे साथ है, अपनी हिदायत के साथ मेरे सामने और उस की ने'मत व अ़ज़मत मेरे दाएं बाएं है । जब मैं ने येह कलाम सुना तो अ़र्ज़ की : क्या आप मुझे अपनी सोह़बत इख़्तियार करने की इजाज़त देंगे ? तो वोह कहने लगा : आप की रफ़ाक़त (या'नी सोह़बत) मुझे इ़बादत से ग़ाफ़िल कर देगी और मैं इस बात को पसन्द नहीं करता (क्यूंकि) मश्रिक़ से मग़रिब तक ज़मीन का बादशाह मेरे लिये काफ़ी है । मैं ने पूछा : आप को इस जगह में घबराहट नहीं होती ? उस ने मुझे जवाब दिया : जिस का ह़बीब व अनीस (या'नी दोस्त) अल्लाह करीम हो, उसे क्यूं कर घबराहट होगी ? मैं ने पूछा : खाना कहां से खाते हैं ? जवाब दिया : जब मैं छोटा था, तो उस ने अपने लुत़्फ़ो करम से मां के पेट में भी मुझे ग़िज़ा दी और अब जब कि मैं बड़ा हो गया हूं, तो क्या अब वोह मुझे रिज़्क़ नहीं अ़ता फ़रमाएगा ? मेरे लिये उस के पास मुक़र्रर शुदा रिज़्क़ है और उस का वक़्त भी लिखा हुवा है । फिर मैं ने उस से दुआ़ की दरख़ास्त की, तो उस ने मुझे यूं दुआ़ दी : अल्लाह करीम आप की आंखों को अपनी ना फ़रमानी से मह़फ़ूज़ फ़रमाए, आप के दिल को अपने ख़ौफ़ से भर दे और आप को उन लोगों से न बनाए जो उस के ग़ैर में मश्ग़ूल हो कर इ़बादत से ग़ाफ़िल हो जाते हैं । इस के बा'द जब वोह जाने के लिये खड़ा हुवा, तो मैं ने उस के क़रीब जा कर अ़र्ज़ की : ऐ मेरे भाई ! फिर कब आप से मुलाक़ात होगी ? तो वोह मुस्कुरा कर कहने लगा : आज के बा'द दुन्या में तो आप से मुलाक़ात न होगी, हां ! बरोज़े क़ियामत जब सब लोग जम्अ़ होंगे, तो अगर आप मुझ से मिलना चाहें, तो दीदारे इलाही करने वालों में मुझे तलाश कीजियेगा । मैं ने पूछा : आप को येह कैसे मा'लूम हो गया ? जवाब दिया : उस की इ़ज़्ज़त की क़सम ! उसी के सबब मा'लूम हुवा क्यूंकि मैं ने अपनी आंख को ह़राम कर्दा चीज़ों से और अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात के ह़ुसूल से

बाज़ रखा और अन्धेरी रातों में उस की इबादत के लिये अ़लाह़िदगी इख़्तियार की (मुझे उम्मीद है कि वोह मुझ से ख़ुश होगा और) इस के बदले वोह मुझे अपना दीदार कराएगा। फिर वोह नौजवान ग़ाइब हो गया, इस के बा'द फिर कभी उस से मुलाक़ात न हो सकी।

(الروض الفائق، المجلس الحادی و الثلاثون فی مناقب الصالحین، ص۱۲۶-۱۲۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए़ में उस नौजवान ने जवानी के ज़माने में ही दुन्या से रिश्ता तोड़ कर इबादतो रियाज़त में ख़ुद को मश्ग़ूल रखा और शरीअ़त की ह़राम कर्दा चीज़ों को देखने से बाज़ रहा और अकेला उस जंगल में रिहाइश इख़्तियार कर ली। इस ह़िकायत में बिल ख़ुसूस उन नौजवानों के लिये इब्रत के बे शुमार मदनी फूल मौजूद हैं कि जो अपनी जवानी के नशे में मद्होश रहते हुवे नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर गुनाहों में मुलव्वस रहते हैं और रब्बे करीम की नाराज़ी का सामान करते हैं। ऐसों को चाहिये कि जवानी की अहम्मिय्यत को समझते हुवे इस के क़ीमती लम्ह़ात को फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद करने के बजाए **अल्लाह** पाक की इबादत में गुज़ारें कि ज़िन्दगी में जवानी की ने'मत सिर्फ़ एक ही बार मिलती है।

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : सिह़्ह़त, जवानी, मालदारी और ज़िन्दगी को ज़ाएअ़ न जाने दो, इस में नेक आ'माल कर लो कि येह ने'मतें बार बार नहीं मिलतीं। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) जवानी खेल कूद में ज़ाएअ़ कर के बुढ़ापे में जब कि आ'ज़ा बेकार हो जाएं, कसरते इबादत की ख़्वाहिश करना बे वुक़ूफ़ी है, जो (अ़मल) करना है, जवानी में कर लो कि जवान, नेक आदमी का बहुत बड़ा दरजा है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 16, मुलख़्ख़सन)

रियाज़त के येही दिन हैं, बुढ़ापे में कहां हिम्मत
*जो कुछ करना हो अब कर लो, अभी **नूरी** जवां तुम हो*

(सामाने बख़्शिश अज़ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांच सुवालात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जवानी यक़ीनन **अल्लाह** करीम की अ़त़ा कर्दा ने'मतों में से एक अ़ज़ीम ने'मत है कि जिस की कोई क़ीमत नहीं, एक बार चली जाए, तो फिर अरबों, खरबों रुपये ख़र्च करने से भी ह़ासिल नहीं होती । अगर हम ने दुन्या में रहते हुवे अपनी जवानी **अल्लाह** करीम की इत़ाअ़त व इबादत में गुज़ारी होगी, तो اِنْ شَآءَ الله बरोज़े क़ियामत शर्मिन्दगी से बच सकेंगे, वरना इस ने'मत की क़द्र न करने के सबब शदीद ज़िल्लतो ख़्वारी उठानी पड़ सकती है क्यूंकि क़ियामत के दिन जवानी से मुतअ़ल्लिक़ भी सुवाल किया जाएगा । चुनान्चे,

शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन बन्दा उस वक़्त तक क़दम न उठा सकेगा जब तक उस से पांच चीज़ों के बारे में सुवाल न कर लिया जाए । (1) उ़म्र किन कामों में गुज़ारी ? (2) जवानी किन कामों में ख़र्च की ? (3) माल कहां से कमाया ? (4) कहां ख़र्च किया ? और (5) अपने इ़ल्म पर कहां तक अ़मल किया ? (ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ...الخ، باب فی القیامۃ، ۴/۱۸۸، حدیث: ۲۴۲۴)

जो ख़ुश नसीब अपनी जवानी की क़द्र करते हुवे नफ़्सानी ख़्वाहिशात से मुंह मोड़ कर सिर्फ़ **अल्लाह** करीम की रिज़ा के ह़ुसूल की ख़ात़िर अपने शबो रोज़ इबादतो रियाज़त में गुज़ारता है, तो वोह दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां पा लेता है । आइये ! इस ज़िम्न में चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

इबादत गुज़ार नौजवान का मक़ाम

1. इरशाद फ़रमाया : अपनी जवानी में इबादत करने वाले नौजवान को, बुढ़ापे में इबादत करने वाले बूढ़े पर ऐसी ही फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि जैसी मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तमाम नबियों पर ।

(الترغیب فی فضائل الاعمال و ثواب ذلک، ص۷۸، حدیث: ۲۲۸)

बहत्तर सिद्दीक़ीन के सवाब का ह़क़दार

2. इरशाद फ़रमाया : जिस नौजवान ने दुन्या की लज़्ज़त और इस के ऐशो इश्रत को छोड़ दिया और अपनी जवानी में **अल्लाह** करीम की फ़रमां बरदारी की जानिब पेश क़दमी की तो, **अल्लाह** करीम उस ख़ुश नसीब को बहत्तर सिद्दीक़ीन के बराबर सवाब अ़ता फ़रमाएगा।

(كنزالعمال، كتاب المواعظ والرقائق...الخ، الفصل الاول، الترغيب الاحادی من الاقوال، الجزء: ٨، ١٥/٣٣٢، حديث: ٤٣٠٩٩)

अल्लाह करीम का ह़क़ीक़ी बन्दा

3. इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** करीम अपनी मख़्लूक़ में उस ख़ूब सूरत नौजवान को सब से ज़ियादा पसन्द फ़रमाता है कि जिस ने अपनी जवानी और हुस्नो जमाल को **अल्लाह** करीम की इबादत में सर्फ़ कर दिया। **अल्लाह** करीम फ़िरिश्तों के सामने ऐसे बन्दे पर फ़ख़्र करते हुवे इरशाद फ़रमाता है कि येह मेरा ह़क़ीक़ी बन्दा है।

(كنزالعمال، الفصل الاول، كتاب المواعظ والرقائق والخطب والحكم، الترغيب الاحادی من الاقوال، الجزء: ٨، ١٥/٣٣٢حديث: ٤٢٠٩٦)

अल्लाह करीम का मह़बूब बन्दा

4. इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** करीम उस नौजवान से मह़ब्बत फ़रमाता है कि जिस ने अपनी जवानी को **अल्लाह** पाक की फ़रमां बरदारी में मिटा दिया हो।

(حلية الاولياء، عبد الملك بن عمر بن عبد العزيز، ٥/٣٩٤، حديث: ٧٤٩٦)

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे मेरे ग़ौस का वासित़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि जवानी की क़द्र करने वालों पर **अल्लाह** करीम कैसा ख़ास फ़ज़्लो करम फ़रमाता है कि उन्हें अपने मह़बूब बन्दों में शामिल फ़रमा लेता है। लिहाज़ा जवान इस्लामी भाइयों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि अगर बुढ़ापे में सुकून व इत़मीनान वाली ज़िन्दगी

गुज़ारने के ख़्वाहिश मन्द हैं, तो ने'मते जवानी को ग़नीमत जानते हुवे इस ख़त्म होने वाली दुन्या के पीछे भागने के बजाए अपने नफ़्स को इबादतो रियाज़त की जानिब माइल करने की कोशिश कीजिये, अगर्चे येह बेहद दुश्वार है क्यूंकि जवानी में उम्मीदें और ख़्वाहिशात उरूज पर होती हैं लेकिन अगर हम दीगर मुआमलात के साथ साथ हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करते हुवे आप की इबादतो रियाज़त से सजी पाकीज़ा ज़िन्दगी के मुताबिक़ अमल करेंगे, तो اِنْ شَآءَ اللّٰه हमारी ज़िन्दगी में भी मदनी बहारें आ जाएंगी।

आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़ौक़े इबादत

हज़रते सय्यिदुना अ़ता رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं और मेरे साथ हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर और हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन अ़म्र رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن, उम्मुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की बारगाहे आ़लिया में ह़ाज़िर हुवे। हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अ़र्ज़ की : हमें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में ह़ैरत में डालने वाली कोई बात बतलाइये। तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रो पड़ीं और इरशाद फ़रमाया : एक रात रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे : मुझे इजाज़त दो कि मैं अपने रब्बे करीम की इबादत कर लूं। मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे अपनी ख़्वाहिश के बजाए, आप का रब्बे करीम के क़रीब होना ज़ियादा पसन्द है। चुनान्चे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर के एक कोने में खड़े हो कर रोने लगे फिर अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के क़ुरआने करीम पढ़ना शुरूअ़ किया, तो दोबारा अश्कबारी फ़रमाई, ह़त्ता कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखों से निकलने वाले आंसू ज़मीन तक जा पहुंचे। इतने में मोअज़्ज़िने रसूल, हज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ाज़िर हुवे। तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रोता देख कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान ! किस चीज़ ने आप को रुलाया ? ह़ालांकि आप के सदक़े तो **अल्लाह** करीम आप के अगलों और पिछलों के गुनाह बख़्शेगा। इरशाद फ़रमाया : क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ? (درّۃ الناصحین، المجلس الخامس والستون: فی بیان البکاء، ص۲۵۳-۲۵۴)

वोह शाफ़ेए महूशर है सरदार मदीने का
रोता है जो रातों को उम्मत की महब्बत में
ग़म ख़्वार है, सादा है मुख़्तार मदीने का
रातों को जो रोता है और ख़ाक पे सोता है
सोता है चटाई पर सरदार मदीने का
क़ब्ज़े में दो आलम हैं पर हाथ का तक्या है

(वसाइले बख़्शिश, स. 180)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि हमारे बख़्शे बख़्शाए आक़ा, हम गुनाहगारों को बख़्शवाने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मा'सूम बल्कि मा'सूमों और इबादत गुज़ारों के सरदार होने के बा वुजूद किस क़दर गिर्या व ज़ारी के साथ **अल्लाह** पाक की इबादत किया करते, ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत इस क़दर बुलन्दो बाला है कि **अल्लाह** पाक ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मालिको मुख़्तार बनाया है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, रब्बे करीम की अ़त़ा से अपने इख़्तियार से रोज़े महूशर बख़्शिश से ना उम्मीद होने वाले गुनहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी शान बयान फ़रमाते हैं : (बरोज़े क़ियामत) सब से पहले मैं (अपने मज़ारे मुबारक से) बाहर तशरीफ़ लाऊंगा, जब लोग जमाअ़त की सूरत में आएंगे, तो मैं ही उन का राहनुमा हूंगा, जब वोह (क़ियामत की हौलनाकियों के सबब) ख़ामोश हो जाएंगे, तो मैं ही उन का ख़त़ीब (या'नी ख़ुत़्बा पढ़ने वाला) हूंगा, जब वोह रोके जाएंगे, तो मैं ही उन का सिफ़ारिश करने वाला हूंगा, जब वोह ना उम्मीद हो जाएंगे, तो मैं ही उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला हूंगा। बुज़ुर्गी और (**अल्लाह** पाक के) तमाम ख़ज़ानों की चाबियां उस दिन मेरे हाथों में होंगी और मैं औलादे आदम में **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सब से ज़ियादा बुज़ुर्गी वाला हूंगा, एक हज़ार ख़िदमत गुज़ार मेरे इर्द गिर्द होंगे। (دارمی، باب ما اعطی النبی من الفضل، ۱/۳۹، حدیث:۴۸)

سُبْحٰنَ اللہ ! कुरबान जाइये ! अव्वलीन व आख़िरीन के सरदार और **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से मालिको मुख़्तार होने के बा वुजूद भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शौक़े इबादत का येह आ़लम था कि कसरते इबादत के सबब क़दमैने शरीफ़ैन पर सूजन के निशानात ज़ाहिर हो जाते और आप

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मत के गुनाहगारों की बख़्शिश की ख़ातिर आहो ज़ारी फ़रमाया करते । इस में बिल खुसूस उन नौजवानों के लिये नसीहत के मदनी फूल मौजूद हैं कि जिन का दिल इबादत की जानिब माइल नहीं होता और वोह सारी सारी रात फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद कर देते हैं । लिहाज़ा ऐसों की ख़िदमत में अर्ज़ है कि खुदारा ! मोहसिने इन्सानिय्यत, ग़म ख़्वारे उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आंसूओं को याद कीजिये, दुन्या व आख़िरत में काम्याबी पाने के लिये अह़कामे खुदावन्दी की बजा आवरी, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की पैरवी और उख़रवी इन्आमात पाने की ह़िर्स में ख़ूब ख़ूब नेकियां कीजिये ।

जवानी को बुढ़ापे से पहले ग़नीमत जानो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! जवानी में इबादत की तौफ़ीक़ नसीब हो जाना बहुत बड़ी ने'मत है क्यूंकि जवानी की देह्लीज़ पर क़दम रखते ही इन्सान, शैतान की ख़तरनाक चालों, नफ़्स की नाजाइज़ ख़्वाहिशों, बुरे दोस्तों की सोह्बतों, दुन्यवी मुस्तक़्बिल बेहतर बनाने की फ़िक्रों और ख़त्म हो जाने वाली दुन्या में खो कर दौलत कमाने के नाजाइज़ त़रीक़ों के सबब गुनाह करता है और इबादतो रियाज़त की त़रफ़ माइल नहीं हो पाता ।

याद रखिये ! हमें बहुत ही थोड़े वक़्त के लिये दुन्या में भेजा गया है और इस वक़्फ़े में क़ब्रो ह़श्र के त़वील तरीन मुआ़मलात के लिये तय्यारी भी करनी है, लिहाज़ा समझदार वोही है जो इस थोड़े से वक़्त को ग़नीमत जानते हुवे क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाए और अपना क़ीमती वक़्त फ़ुज़ूल कामों में बरबाद न करे क्यूंकि मा'लूम नहीं कि आइन्दा लम्ह़े वोह ज़िन्दा भी रहेगा या मौत उसे लम्बे अ़र्से के लिये गहरी नींद सुला देगी । लिहाज़ा जवानी और ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे नेकियों में मश्ग़ूल हो जाइये ।

ह़दीसे पाक में इरशाद होता है : पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत जानो । बुढ़ापे से पहले जवानी को, बीमारी से पहले तन्दुरुस्ती को, फ़क़ीरी से पहले अमीरी को, मसरूफ़िय्यत से पहले फ़ुरसत को और मौत से पहले ज़िन्दगी को । (مِشْكَاةُ الْمَصَابِيْح، كتاب الرقاق، الفصل الثانى، ۲/۲۴۵، حديث:۵۱۷۴) अगर हम भी

अपनी जवानी को ग़फ़्लत में गंवाने के बजाए क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाएंगे, तो इस की बरकत से न सिर्फ़ हमारी दुन्या बेहतर होगी बल्कि क़ब्र में भी रब्बे करीम की नवाज़िशों की छमाछम बारिशें होंगी, اِنْ شَآءَ الله । आइये ! इस ज़िम्न में एक बहुत ही प्यारी ह़िकायत सुनते हैं। चुनान्चे,

दो जन्नतों की ख़ुश ख़बरी

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में एक नेक नौजवान मस्जिद में मश्ग़ूले इबादत रहता था, जब उस का इन्तिक़ाल हो गया, तो (रातों रात उस के ग़ुस्ल और कफ़न, दफ़्न का इन्तिज़ाम करने के बा'द) सुब्ह़ जिस वक़्त अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस वाक़िए़ की ख़बर दी गई, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के वालिद के पास उस के नेक बेटे के इन्तिक़ाल की ता'ज़ियत के सिलसिले में तशरीफ़ ले गए। (ता'ज़ियत कर लेने के बा'द) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : तुम ने मुझे ख़बर क्यूं न दी ? (कि मैं भी उस की नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा में शरीक हो जाता) उस ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरल मोमिनीन ! रात (काफ़ी) हो चुकी थी, (लिहाज़ा आप के आराम के पेशे नज़र आप को बताना मुनासिब न समझा गया) तो अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : मुझे उस नेक नौजवान की क़ब्र के पास ले चलो, लिहाज़ा अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथियों को (उस की) क़ब्र के पास ले जाया गया, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पुकारा : ऐ फ़ुलां ! (**अल्लाह** पाक फ़रमाता है :)

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾

(پ۲۷،الرحمٰن:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे, उस के लिये दो जन्नतें हैं।*

उस (बा अ़मल) नौजवान ने क़ब्र के अन्दर से दो मरतबा जवाब दिया : या अमीरल मोमिनीन ! मेरे रब्बे करीम ने मुझे वोह **दो जन्नतें** अ़ता फ़रमा दी हैं। (تاریخ ابن عساکر،عمرو بن جامع بن عمرو بن محمد بن حرب،۴۵/۴۵۰،رقم:۵۳۲۰ملتقطاً)

سُبْحٰنَ اللہ ! आप ने सुना कि उस नौजवान ने अपनी सारी ज़िन्दगी गुनाहों से बचते हुवे नेकियों में गुज़ारी, तो मरने के बा'द येह इबादत उस की बख़्शिश व मग़्फ़िरत का सबब बनी और जन्नत की आ'ला ने'मतें भी नसीब हुईं। याद रखिये ! येह ख़ूब सूरती व जवानी ख़त्म होने वाली दौलत है और इस पर ग़ुरूरो तकब्बुर करना बे वुक़ूफ़ी व नादानी है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तन्दुरुस्ती व जवानी पर इतराने और दिन रात गुनाहों में ज़ाएअ़ करने के बजाए इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ ज़ौक़े इबादत और शौक़े तिलावत का मा'मूल बनाए रखिये, ऐसे में अगर बुढ़ापा आ गया और इबादत की लगन भी बाक़ी रही, तो सिह्हत व हिम्मत न होने के बा वुजूद اِنْ شَآءَ اللہ इस हालत में भी जवानी की इबादतों जैसा सवाब मिलता रहेगा। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब बन्दा (हालते इस्लाम में नेकियां करते हुवे) उम्र के उस हिस्से में पहुंच जाए कि उसे किसी चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ (पहले से) इल्म होने के बा वुजूद (ब वक़्ते ज़रूरत) वोह चीज़ याद न रहे, तो **अल्लाह** करीम उस के नामए आ'माल में वोह नेकियां भी लिखता रहता है जो वोह अपनी सिह्हत के ज़माने में किया करता था। (مُسْنَدِ اَبِی یَعْلٰی، مسند انس بن مالک، عبد اللہ بن عبد الرحمن الانصاری عن انس، ۳/۲۹۳، حدیث: ۳۶۶۶)

हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो बूढ़ा आदमी बुढ़ापे की वज्ह से ज़ियादा इबादत न कर सके मगर जवानी में बड़ी (ख़ूब) इबादतें करता रहा हो, तो **अल्लाह** पाक उसे मा'ज़ूर क़रार दे कर उस के नामए आ'माल में वोही जवानी की इबादत लिखता है। (मिरआतुल मनाजीह, 7 / 89)

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "सदाए मदीना"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जवानी में इबादत का जज़्बा बढ़ाने और नफ़्सो शैतान की चालों से होश्यार रहने के लिये आशिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रह कर ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी

कामों में से एक मदनी काम **"सदाए मदीना"** लगाना भी है। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने को सदाए मदीना लगाना कहते हैं। याद रहे ! इस मदनी काम का रिसाला बनाम **"सदाए मदीना"** भी मन्ज़रे आ़म पर आ चुका है।

❖ اَلْحَمْدُ لِلّٰه सदाए मदीना की बरकत से नमाज़े तहज्जुद की सआ़दत मिल सकती है। ❖ सदाए मदीना की बरकत से नमाज़ की ह़िफ़ाज़त होती है। ❖ सदाए मदीना की बरकत से मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़े फ़ज्र की अदाएगी हो सकती है। ❖ सदाए मदीना की बरकत से नेकी की दा'वत देने का सवाब भी कमाया जा सकता है। ❖ सदाए मदीना की बरकत से दा'वते इस्लामी की नेक नामी और तश्हीर होगी। ❖ सदाए मदीना लगाने वाला बार बार मुसलमानों को ह़ज और मीठा मदीना देखने की दुआ़ देता है। **अल्लाह** पाक ने चाहा, तो येह दुआ़एं उस के ह़क़ में भी क़बूल होंगी। ❖ सदाए मदीना में पैदल चलने की बरकत से सिह़ह़त भी अच्छी होगी। सदाए मदीना लगाना मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना है और मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना सुन्नते मुस्त़फ़ा है, मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना सुन्नते दावूदी है, मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना सुन्नते ह़ैदरी व सुन्नते फ़ारूक़ी है। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नमाज़े फ़ज्र के लिये लोगों को जगाते हुवे मस्जिद तशरीफ़ लाते थे।

(طبقات کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ۳/۲۶۳ مفہوماً)

आइये ! बत़ौरे तरग़ीब सदाए मदीना लगाने की एक मदनी बहार सुनिये और झूमिये। चुनान्चे,

सदाए मदीना की बरकत से फ़ैज़ाने मदीना के लिये ज़मीन मिल गई

एक इस्लामी भाई आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले के साथ एक शहर में गए, अज़ाने फ़ज्र के बा'द वोह सदाए मदीना लगाते जा रहे थे कि अचानक एक घर से एक मॉडर्न (Modern)

नौजवान उन के साथ शामिल हुवा और उस ने फ़ज्र की नमाज़ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा की । बा'द में उस नौजवान के वालिद मदनी क़ाफ़िले वालों से मिलने के लिये आए । येह साहि़बे सरवत थे, इन्हों ने आ कर बताया कि सदाए मदीना की बरकत से इन का ना फ़रमान मॉडर्न (Modern) बे नमाज़ी बेटा पंजवक़्ता नमाज़ पढ़ने लगा है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ उस मॉडर्न नौजवान के वालिद ने मुतअस्सिर हो कर उस शहर में मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीने के लिये ज़मीन अ़तिय्या कर दी ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इबादत की बरकत से बुढ़ापे में भी जवान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ज़ैनुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने रजब ह़म्बली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जवानी में इबादत करने से मुतअ़ल्लिक़ बहुत प्यारी बात इरशाद फ़रमाते हैं : जिस ने **अल्लाह** करीम को उस वक़्त याद रखा जब वोह जवान और तन्दुरुस्त था, **अल्लाह** करीम उस का उस वक़्त ख़याल रखेगा जब वोह बूढ़ा और कमज़ोर हो जाएगा और उसे बुढ़ापे में भी अच्छी क़ुव्वते समाअ़त (या'नी सुनने की क़ुव्वत), बसारत (या'नी देखने की क़ुव्वत), त़ाक़त और ज़िहानत अ़ता फ़रमाएगा । ह़ज़रते सय्यिदुना अबुत्तय्यिब त़बरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सौ साल से ज़ियादा उ़म्र पाई, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़ेहनी व जिस्मानी लिह़ाज़ से तन्दुरुस्त और त़ाक़तवर थे । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने सिह़ह़त का राज़ पूछा तो इरशाद फ़रमाया : मैं ने जवानी में अपनी जिस्मानी सलाहि़य्यतों को गुनाह से मह़फ़ूज़ रखा और आज जब मैं बूढ़ा हो गया हूं, तो **अल्लाह** करीम ने उन्हें मेरे लिये बाक़ी रखा है जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक बूढ़े शख़्स को देखा जो भीक मांग रहा था । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : इस शख़्स ने जवानी में **अल्लाह** करीम के ह़ुक़ूक़ को ज़ाएअ़ किया, तो **अल्लाह** पाक ने बुढ़ापे में इस की क़ुव्वत को ज़ाएअ़ फ़रमा दिया । (مجموعہ رسائلِ ابنِ رجب، قولہ یحفظک، ۳/۱۰۰ ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** करीम के नेक बन्दों ने अपनी जवानी के गुल्शन को इबादतो रियाज़त के पानी से सैराब

किया और गुनाहों से बचते रहे, तो अल्लाह करीम ने बुढ़ापे में भी उन पर जवानी के असरात बाक़ी रखे मगर अफ़्सोस ! हमारी नौजवान नस्ल इबादत व तिलावत में मश्ग़ूल रहने के बजाए मोबाइल फ़ोन, इन्टरनेट, सोशल मीडिया (Social Media) और टीवी के ग़लत़ इस्ति'माल के सबब अपना क़ीमती वक़्त बे दर्दी व बे फ़िक्री के साथ बरबाद करती नज़र आती है। मोबाइल फ़ोन जदीद टेक्नॉलोजी का एक हिस्सा, वक़्त की ज़रूरत और राबिते़ का अहम ज़रीआ़ है, जहां येह हमारे लिये मुफ़ीद है, वहीं इस का ग़लत़ इस्ति'माल बहुत से नुक़्सानात का बाइस भी बन रहा है। हमारे स्कूल व कॉलेज के वोह त़लबा व त़ालिबात जिन्हें हम मुस्तक़्बिल के मे'मार कहते हैं, वोह भी इस बुरी आफ़त का शिकार हो चुके हैं, कोई गेम्ज़ का दीवाना है, तो कोई फ़िल्मी गानों का मतवाला, किसी का मेमोरी कार्ड ह़या सोज़ वीडियोज़ से भरा हुवा है, तो कोई नाइट पेकेजिज़ से फ़ाइदा उठाते हुवे सारी सारी रात फ़ोह़्श गुफ़्तगू में गुज़ार रहा है। इसी त़रह़ इन्टरनेट दौरे जदीद की अहम और मुफ़ीद ईजाद है, इस के दीनी और दुन्यवी बे शुमार फ़वाइद हैं मगर इस के ज़रीए़ नौजवानों में बहुत सी बुराइयां आ़म होती जा रही हैं। इन्टरनेट एक छुरी की मानिन्द है जिस का सह़ीह़ और ग़लत़ दोनों ही इस्ति'माल हैं मगर अफ़्सोस ! हमारे मुआ़शरे में इन्टरनेट का ग़लत़ इस्ति'माल ज़ियादा है। इन्टरनेट पर मौजूद बे ह़याई से पुर मज़ामीन और कहानियां, गन्दी तस्वीरें और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को भड़काने वाली बेहूदा फ़िल्मों, ड्रामों ने नौजवान नस्ल के अख़्लाक़ व किरदार, आ़दातो अत़्वार को तबाहो बरबाद कर दिया है, सारी सारी रात इन्टरनेट पर बड़ी बे दर्दी के साथ अपना पैसा और क़ीमती वक़्त ज़ाएअ़ करना, झूट बोलना, लोगों को धोका देना, Black Mailing जैसी बुराइयां हमारे मुआ़शरे के नौजवानों में बड़ी तेज़ी से आ़म होती जा रही हैं। पहले तो इन्टरनेट का इस्ति'माल सिर्फ़ कम्प्यूटर तक मह़दूद था मगर जब से येह सहूलत मोबाइल पर मौजूद हुई, तो छोटी उ़म्र के बच्चे भी इस का इस्ति'माल कर के अपना मुस्तक़्बिल ज़ाएअ़ कर रहे हैं। इस बीमारी में मुब्तला नौजवान ता'लीम से मह़रूम हो कर मुआ़शरे में कोई अहम मक़ाम पाने के बजाए अख़्लाक़ व तमीज़ खो कर मुआ़शरे में ज़लीलो ख़्वार होते नज़र आ रहे हैं।

ख़ुदारा ! ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये और अपनी इस्लाह़ के साथ साथ अपनी औलाद की इस्लाह़ का भी ज़ेह्न बनाइये । अगर हमें अपने बच्चों को इस जदीद टेक्नॉलोजी से मुतआ़रिफ़ करवाना ही है, तो इस का सह़ीह़ इस्ति'माल भी सिखाएं, इन की निगरानी भी करते रहें, इन्टरनेट का फ़ाइदा उठाते हुवे अपना और अपनी औलाद का क़ीमती वक़्त सह़ीह़ जगह इस्ति'माल करने के लिये दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net का विज़िट कीजिये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस वेबसाइट पर क़ुरआने पाक, तर्जमए कन्ज़ुल ईमान और तफ़ासीर के इ़लावा ह़दीस व उसूले ह़दीस, फ़िक़्ह व उसूले फ़िक़्ह, सीरत व तसव्वुफ़ वग़ैरा मौज़ूआ़त से मुतअ़ल्लिक़ उर्दू, इंगलिश, अ़रबी, हिन्दी, गुजराती और दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में कुतुबो रसाइल का न सिर्फ़ ऑन लाइन मुत़ालआ़ किया जा सकता है बल्कि फ़्री डाउन लोड और प्रिन्ट आउट की सहूलत भी दस्तयाब है । इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए मुख़्तलिफ़ सुवालात के दिलचस्प जवाबात पर मुश्तमिल मदनी मुज़ाकरे, निगराने शूरा व मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयानात, ह़म्दो ना'त, मन्क़बत और मुख़्तसर इस्लाह़ी ख़ाके भी मौजूद हैं जिन्हें आप डाउन लोड (Download) कर के फ़ेसबुक (Facebook) या वॉट्स ऐप (Whatsapp) का सह़ीह़ इस्ति'माल करते हुवे दूसरे इस्लामी भाइयों को शेएर (Share) भी कर सकते हैं । शरई मसाइल में रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये ऑन लाइन दारुल इफ़्ता और दुखी इन्सानिय्यत की ग़म ख़्वारी और रूह़ानी इ़लाज के लिये ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या, ऑन लाइन काट और इस्तिख़ारा भी करवा सकते हैं । इस के इ़लावा दा'वते इस्लामी के चन्द शो'बाजात का तआ़रुफ़ भी शामिल है । कमो बेश 104 शो'बाजात और दा'वते इस्लामी के दीगर कई मदनी कामों में होने वाले लाखों लाख रुपये के अख़राजात में ब ज़रीआ़ इन्टरनेट माली मदद का मुकम्मल त़रीक़ए कार भी दिया गया है, जिस के ज़रीए आप सदक़ाते वाजिबा (मसलन ज़कात, फ़ित्राना, उ़श्र, रोज़ों का फ़िद्या, क़सम का कफ़्फ़ारा, मन्नत वग़ैरा)

और नाफ़िला (सदक़ात व ख़ैरात वग़ैरा) के ज़रीए नेकी के कामों में हिस्सा ले सकते हैं। सॉफ़्टविएर की सूरत में अल मदीना लाइब्रेरी भी मौजूद है जिसे कम्प्यूटर में इन्स्टॉल (Install) कर के सर्चिंग ऑपशन (Searching Option) की मदद से 200 से ज़ाइद कुतुबो रसाइल से फ़ाइदा ह़ासिल कर सकते हैं। इस के इलावा अवक़ातुस्सलात सॉफ़्टविएर के ज़रीए मुख़्तलिफ़ मुमालिक और शहरों में सह़री इफ़्तार और नमाज़ के अवक़ात भी मा'लूम कर सकते हैं।

अल्लाह पाक हमें दौरे जदीद की इन ईजादात का सह़ीह़ इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इन के ग़लत़ इस्ति'माल के ज़रीए गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियों में दिल लगाने की कोशिश कीजिये और किसी गुनाह को छोटा समझ कर हरगिज़ न कीजिये क्यूंकि एक गुनाह कई बुराइयों का मजमूआ़ होता है, या'नी मज़ीद दस बुराइयां अपने साथ लाता है। जैसा कि :

गुनाह के दस नुक़्सानात

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : गुनाह अगर्चे एक ही हो, अपने साथ दस बुरी ख़स्लतें ले कर आता है। (1) जब बन्दा गुनाह करता है, तो **अल्लाह** करीम को ग़ज़ब दिलाता है, ह़ालांकि वोह (रब्बे करीम) उस बन्दे पर (ग़ज़ब फ़रमाने की) क़ुदरत रखता है। (2) वोह (या'नी गुनाह करने वाला) इब्लीसे लईन (या'नी शैत़ाने मल्ऊ़न) को ख़ुश करता है। (3) जन्नत से दूर हो जाता है। (4) जहन्नम के क़रीब आ जाता है। (5) वोह अपनी सब से प्यारी चीज़ या'नी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है। (6) वोह अपने दिल को नापाक कर बैठता है, ह़ालांकि वोह पाक होता है। (7) वोह आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों को तक्लीफ़ देता है। (8) वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन के रौज़ए मुबारका में नाराज़ करता है। (9) ज़मीन व आसमान और तमाम मख़्लूक़ को (अपनी) ना फ़रमानी

पर गवाह बना लेता है (10) वोह तमाम इन्सानों से ख़ियानत और रब्बे करीम की ना फ़रमानी करता है। (بحر الدموع، الفصل الثانی:عواقب المعصیة، ص ۳۰-۳۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि गुनाह अगर्चे एक ही होता है मगर उस की वज्ह से इन्सान दस बुराइयों का शिकार हो जाता है। लिहाज़ा जब भी कोई गुनाह हो जाए, तो फ़ौरन रब्बे करीम की बारगाह में सच्ची तौबा कीजिये। अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! बा'ज़ नादान जवानी के नशे और फ़ानी दुन्या के धोके में मुब्तला हो कर लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधे, ग़फ़्लत की चादर ताने, शरई अह्काम को पसे पुश्त डाल कर तौबा के मुआमले में मुसल्सल टाल मटोल से काम लेते हुवे ख़ुद को इस त़रह़ दिलासे देते हैं कि "अभी तो मेरे खेलने कूदने के दिन हैं", "फुलां को देखो वोह तो इतना बूढ़ा हो चुका है मगर अभी तक ज़िन्दा है जब कि मैं तो अभी तन्दुरुस्त और जवान हूं", यूं झूटी और खोखली उम्मीदों के सहारे ज़िन्दा रहते हैं फिर जैसे जैसे जवानी का ज़वाल शुरूअ़ होता है, तो बुढ़ापा भी अपनी जड़ें मज़बूत़ करता चला जाता है फिर जा कर ऐसों को होश आता है कि अब तो मुझे तौबा कर के ख़ुद को गुनाहों से बचाने और **अल्लाह** करीम की ख़ूब ख़ूब इबादात बजा लाने का पक्का इरादा करना चाहिये फिर अगर्चे बसा अवक़ात हिम्मत कर के नेकियां करने में कामयाब हो भी जाते हैं मगर जवानी की बहारों को याद कर के ख़ूब दिल जलाते और अश्क बहाते हैं कि **ऐ काश** ! मैं अपनी जवानी को इबादतो रियाज़त में बसर कर लेता मगर **आह** ! जवानी तो किसी "**गुज़रे कल**" की त़रह़ जा चुकी और अब पलट कर कभी वापस नहीं आएगी।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जवानी में नेक नमाज़ी बनने और रिज़ाए इलाही ह़ासिल करने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और नेकी की दा'वत की धूमें मचाने में दा'वते इस्लामी का साथ दीजिये। اَلْحَمْدُ لِله दा'वते इस्लामी दुन्या भर में कमो बेश 104 शो'बाजात में दीने मतीन की ख़िदमत में मसरूफ़े अ़मल है, इन्ही शो'बाजात में से एक "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" भी है,

जिस के तहत सब से पहला दारुल इफ़्ता 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1421 सिने हि. को जामेअ़ मस्जिद, कन्ज़ुल ईमान, बाबुल मदीना में क़ाइम हुवा और अब तक बाबुल मदीना के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों और मुल्के मुर्शिद के मुख़्तलिफ़ शहरों में भी दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत क़ाइम हो चुके हैं, जहां मुफ़्तियाने किराम उम्मते मुस्लिमा की शरई रहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल हैं। इस के इलावा दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्तियाने किराम टेलीफ़ोन, वोंट्स ऐप (Whatsapp) और इन्टरनेट पर दुन्या भर के मुसलमानों की त़रफ़ से पूछे जाने वाले मसाइल का ह़ल बताते हैं। इन्टरनेट के ज़रीए़ दुन्या भर से इस मेल ऐड्रेस : (darulifta@dawateislami.net) पर सुवालात पूछे जा सकते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मदनी चेनल के सिलसिलों में "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" के नाम से एक मक़्बूले आ़म और निहायत मा'लूमाती सिलसिला भी नश्र किया जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इल्मे दीन का नूर फैलाने के लिये दा'वते इस्लामी की मजलिस "**आई टी** (IT)" के तआ़वुन से "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" मोबाइल ऐप्लीकेशन (Application) भी आ चुकी है और मज़ीद तरक़्क़ी का सफ़र जारी है। **अल्लाह** करीम "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" को मज़ीद तरक़्क़ियां अ़ता फ़रमाए। **اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा अ़क़्लमन्द वोही है जो ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे गुनाहों से तौबा कर ले और अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी ज़ियादा से ज़ियादा इबादते इलाही में गुज़ारता रहे, बिल ख़ुसूस नौजवानों को तौबा में हरगिज़ देर नहीं करनी चाहिये क्यूंकि **अल्लाह** पाक को नौजवान की तौबा बहुत पसन्द है। जैसा कि :

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّ اللہَ تَعَالٰی یُحِبُّ الشَّابَّ التَّائِبَ जवानी में तौबा करने वाला शख़्स, **अल्लाह** करीम का मह़बूब है।

(کنزالعمال، کتاب التوبۃ، الفصل الاول فی فضلھا والترغیب فیھا، الجزء:۴، ۲/۸۷، حدیث:۱۰۱۸۱)

एक और जगह इरशाद फ़रमाया : مَا مِنْ شَیْءٍ اَحَبُّ اِلَی اللهِ مِنَ الشَّابِّ التَّائِبِ अल्लाह करीम को तौबा करने वाले नौजवान से ज़ियादा पसन्दीदा कोई चीज़ नहीं। (کنزالعمال،حرف المیم، کتاب المواعظ والحکم، الترغیب الاحادی من الاکمال، الجزء:۸، ۱۵/۳۳۲، حدیث:۴۳۱۰۱)

नौजवानों की इस्लाह़ और दा'वते इस्लामी का किरदार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में सुन्नतों से दूर, ह़िर्स व लालच के नशे में चूर और नफ़्सो शैत़ान के हाथों मजबूर हो कर गुनाहों के सैलाब में बहने वाले नौजवानों की इस्लाह़ और अख़्लाक़ी तरबिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त 63 रोज़ा मदनी तरबिय्यती कोर्स भी होता है। इस कोर्स की अहम्मिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 510 पर फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों से माला माल 63 रोज़ा (मदनी) तरबिय्यती कोर्स आख़िरत के लिये इस क़दर नफ़्अ़ बख़्श है कि इस में जो कुछ सीखने को मिलता है, उस की तफ़्सीलात मा'लूम हो जाने के बा'द शायद दीन का दर्द रखने वाला हर मुसलमान येह ह़सरत करेगा कि **काश** ! मुझे भी 63 रोज़ा (मदनी) तरबिय्यती कोर्स करने की सआ़दत ह़ासिल हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! बाबुल मदीना के इ़लावा दीगर शहरों में भी (मदनी) तरबिय्यती कोर्स का सिलसिला किया जाता है। इस में बा'ज़ वोह उ़लूम ह़ासिल होते हैं, जिन का सीखना हर आ़क़िल, बालिग़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! (मदनी) तरबिय्यती कोर्स में (अख़्लाक़ी तरबिय्यत के साथ साथ) वुज़ू व ग़ुस्ल के इ़लावा नमाज़ का अ़मली त़रीक़ा सिखाया जाता, ग़ुस्ले मय्यित, तजहीज़ो तक्फ़ीन, नमाज़े जनाज़ा व नमाज़े ई़द की तरबिय्यत होती है, मदनी क़ाइ़दे के ज़रीए़ दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआनी ह़ुरूफ़ की अदाएगी की ता'लीम दी जाती है और क़ुरआने करीम की आख़िरी 20 सूरतें ज़बानी ह़िफ़्ज़ और सूरतुल मुल्क की मश्क़ करवाई जाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस की बरकत से बहुत से नौजवान दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो चुके हैं और उन की बे रौनक़ ज़िन्दगियों में मदनी बहारें आ गईं और वोह अपनी जवानी के पुर बहार अय्याम अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर वक़्फ़ कर के इस मदनी मक़्सद कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" को आ़म करने वाले बन गए।

रिसाला "जवानी कैसे गुज़ारें ?" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नौजवानों में इबादत का ज़ौक़ पैदा करने और सुन्नतों पर अ़मल का शौक़ बढ़ाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 18 रबीउ़ल अव्वल सिने 1412 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 26 सितम्बर सिने 1991 ईसवी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़, जामेअ़ मस्जिद (बाबुल मदीना) में "**जवानी की इबादत के फ़ज़ाइल**" के उ़न्वान से बयान फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने इस की मदद से नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ "**जवानी कैसे गुज़ारें ?**" के नाम से एक रिसाला तरतीब दिया है। आप भी इस रिसाले को मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये, اِنْ شَآءَ الله येह रिसाला जवानी के मक़्सद को समझने और इबादत में दिल लगाने में काफ़ी ह़द तक मददगार साबित होगा। दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस रिसाले को पढ़ा भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खाना खाने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**163 मदनी फूल**" से खाना खाने की सुन्नतें और आदाब सुनते हैं। पहले दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

1. सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कई रातें मुसलसल फ़ाक़ा फ़रमाते । आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ाना को रात की रोटी मुयस्सर न आती और अक्सर जव की रोटी खाते । (ترمذی، کتاب الزھد، ۴/۱۶۰، حدیث: ۲۳۶۷)
2. इरशाद फ़रमाया : मेरे रब्बे करीम ने मेरे लिये इरशाद फ़रमाया : मेरे वासिते मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ों को सोने का बना दिया जाए मगर मैं ने अ़र्ज़ किया : या **अल्लाह** करीम ! मुझे तो येह पसन्द है कि अगर एक दिन खाऊं, तो दूसरे दिन भूका रहूं ताकि जब भूका रहूं, तो तेरी त़रफ़ गिर्या व ज़ारी करूं और तुझे याद करूं और जब खाऊं, तो तेरा शुक्र व ह़म्द करूं । (ترمذی، کتاب الزھد، ۴/۱۵۵، حدیث: ۲۳۵۴)

ए'लान

खाना खाने की मज़ीद सुन्नतें और आदाब तरबिय्यती ह़ल्क़ों में बयान की जाएंगी, लिहाज़ा इन सुन्नतों और आदाब को जानने के लिये तरबिय्यती ह़ल्क़ों में ज़रूर शिर्कत कीजिये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ **तमाम गुनाह मुआफ़ :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ **रह़मत के सत्तर दरवाज़े :** صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है** ! ! !

(الترغیب والترہیب ج ٢ ص ٣٢٩، حدیث ٣١)

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْكِ اللہِ

हज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات)

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है** ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ١٢٥)

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَاَھْلُہٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने इस दुआ़ को 3 मरतबा पढ़ा तो गोया उस ने शबे क़द्र ह़ासिल कर ली । (تاریخ ابنِ عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵)

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवरदगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1163-1164)